इकाई 14 जापान : पराजय और मित्र-राष्ट्रों का नियंत्रण

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 पृष्ठभूमि

14.3 मित्र राष्ट्रों का कब्ज़ा

14.3.1 राजनीतिक निहितार्थ

14.3.2 आर्थिक निहितार्थ

14.3.3 कब्ज़े पर जापान की प्रतिक्रियाएँ

14.4 उच्च विकास का काल (1552-1973)

14.4.1 राजनीतिक घटनाक्रम

14.4.2 आर्थिक विकास

14.5 तेल आघात और उसके पश्चात् की स्थिति

14.6 सारांश

14.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान में होने वाले आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रम के विषय में चर्चा की गयी है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न बातों को समझ सकेंगे:

- युद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों के जापान पर कब्ज़े का स्वरूप,
- जापान के तेज आर्थिक विकास के कारण,
- युद्ध पश्चात् की राजनीतिक व्यवस्था और उदारवादी प्रजातांत्रिक दल (लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी) का प्रभुत्व, और
- जापान के विदेश संबंधों का आधार और अमेरिकी गठबंधन का महत्व।

14.1 प्रस्तावना

जापान ने 14 अगस्त, 1943 को मित्र शक्तियों के आगे घुटने टेक दिए और दो सप्ताहों में मित्र सेनाओं के सर्वोच्च सेनापति (जिसे स्कैप के नाम से जाना जाता था। SCAP से अभिप्राय था (Supreme Commandar of the Allied Porces) जनरल डगलस मैक आर्थर, ने जापान पहुंच कर उसके कब्ज़े का काम शुरू कर दिया। यह कब्ज़े की कार्यवाही अप्रैल 1952 में सान फ्रांसिस्को संधि के प्रभावी होने तक चली। लेकिन कब्ज़ा करने वाली प्रभुत्वशाली शक्ति अमेरिका ही रहा। उसी ने जापान की राजनीतिक और आर्थिक नीतियों का निर्धारण किया। जनरल आर्थर के माध्यम से जापान को सुधारने और उसे फिर प्रसारवादी ताकत बनने से रोकने के लिए कुछ उपाय किये गये। इस इकाई में न केवल जापान के समर्पण, बल्कि इस पर मित्र सेनाओं के कब्ज़े से संबंधी विभिन्न मसलों पर भी गौर किया गया है। जापान की प्रतिक्रिया का भी विवेचन किया गया है। जापान के आर्थिक विकास का आकलन करने के लिए हमने अपने विषय से आगे काल को भी ले लिया है।

ऐसा हमने इस उद्देश्य से किया, जिसमें उच्च आर्थिक विकास काल (1952-73) पर हमारे विषय के काल के प्रभाव को और उसके बाद उठने वाली समस्याओं को समझा जा सके। दरअसल, यह जापानी इतिहास पर हमारे पाठ्यक्रम की अंतिम इकाई है। जिसमें अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक परिदृश्य में जापान की भावी भूमिका पर भी टिप्पणी की गयी है। 1945 में जापान युद्ध के हाथों ध्वस्त हो गया था और उसकी अर्थव्यवस्था और उसका समाज जर्जर हो गये थे। भविष्य अंधकारमय और निराशाजनक दिखायी देता था। फिर भी, 1971 तक स्थिति यह थी कि रिचर्ड हैलोरन न्यूयार्क टाइम्स में यह लिख रहा था कि जापान ''एशिया का सबसे बढ़िया वस्त्र पहनने वाला, सबसे लंबी आयु वाला, और सबसे संपन्न राष्ट्र'' था।

14.2 पृष्ठभूमि

यह बदलाव कैसे आया और किन शक्तियों ने इसमें मदद की, यह एक ऐसा सवाल है जिस पर न केवल शैक्षिक पत्रिकाओं में, बल्कि लोकप्रिय कृतियों, पत्रिकाओं और अखबारों में भी बहस चली है। जापान की बढ़ती औद्योगिक शक्ति का आभास पूरी दुनिया ही करती रही है, इसलिए लोग एक एशियाई देश की सफलता को लेकर असमंजस में रहे और उन्होंने इसकी अनेक ढंग से व्याख्या करने का प्रयास किया है :

- कुछ का तर्क है कि यह जापान की कन्फ्युशसी विरासत और ''पारंपरिक'' मूल्यों पर उसका ज़ोर था जिसके चलते उसकी सामाजिक व्यवस्था सुरक्षित रही और उसके लिए राष्ट्रीय वृद्धि के लिए आवश्यक नीतियाँ अपनाना संभव हुआ।
- कुछ लोग युद्ध के पश्चात् जापान के पुनर्निर्माण के लिए अमेरिका की भारी सहायता और कोरियाई युद्ध और वियतनामी युद्ध को जापानी अर्थव्यवस्था को उछाल देने वाला और उसकी वृद्धि को बढ़ाने वाला मानते हैं।
- कुछ समीक्षकों के अनुसार आर्थिक चमत्कार संभव होने का कारण जापान की वे भीतरी प्रतिबंधकारी नीतियाँ थीं जिन्होंने सामाजिक सुविधाओं को नीचे स्तरों पर रखा।
- यह भी कहा जाता है कि जापान ने एक आक्रामक आर्थिक नीति अपनायी। अपने बाज़ार को अत्यधिक सुरक्षित रखते हुए और अपने उद्योग को आर्थिक सहायता देते हुए, उसके लिए एक नियोजित ढंग से होड़ करना संभव हुआ।
- कुछ विद्वान जापान को एक उन्नत विकसित देश के स्तर पर लाने की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं उद्योग मंत्रालय (एम आई टी आई) की भूमिका को निर्णायक मानते हैं।

जापान के विकास का श्रेय किसी एक कारक को देना गलत होगा। और, जापान की सफलता के रहस्यों को खोलने के लिए किसी एक ''कुंजी'' की तलाश निरर्थक है। क्योंकि, ऐसा करते समय हम इस सच्चाई को नजरअंदाज कर जाते हैं कि जापानी वृद्धि कुछ ''अप्रत्याशित'' और ''अचानक'' के अर्थ में ''चमत्कार'' नहीं था जैसा कि हम इससे पहले की इकाइयों में देख चुके हैं, जापानी सफलता का मूल इसके इतिहास में कम से कम सत्रहवीं शताब्दी तक जाता है। दूसरे शब्दों में, जापान ने एक लंबे अरसे में अपनी संस्थाओं और कौशलों का विकास किया है। युद्ध के कौशलों के बाहरी परिणामों – कारखानों और इमारतों– को नष्ट कर दिया, और उसकी कीमती जिंदगियाँ खत्म हो गयी। लेकिन, प्रयासों और असरकारी नीतियों के जरिए जापान ने उन्हीं कौशलों के बूते पर पुनर्निर्माण कर लिया जो उसके पास बचे रह गये थे। जापानी लोग कोई नयी शुरुआत नहीं कर रहे थे, बल्कि पुनर्निर्माण कर रहे थे।

युद्ध पश्चात् के काल को बहुत स्वाभाविक तौर पर मित्र राष्ट्रों के कब्ज़े के साढे छह वर्षों (1945-1952) और फिर 1952-1973 के उस काल में बांटा जा सकता है, जब जापान ने अपनी अर्थव्यवस्था और समाज के पुनर्निर्माण का काम किया और वह एक समृद्ध और स्थिर राष्ट्र के रूप में उभरा। इस दौर का समापन उस तेल संकट के साथ होता है जिसके जापान समायोजन करने को बाध्य हो गया। 1973 से आज तक की स्थिति यह है कि जापान न केवल एक शक्तिशाली आर्थिक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आया है, बल्कि उसने एक राजनीतिक भूमिका भी निभानी शुरू कर दी है। यह और बात है कि वह यह काम बहुत सीमित तौर पर और संकोच के साथ कर रहा है।

जापान की विदेश नीति का आधार अमेरिकी गठबंधन रहा है, जिसके कारण जापान की सुरक्षा सुनिश्चित होती है। इसी के कारण जापान के लिए यह संभव हुआ है कि वह अपनी शक्ति का आर्थिक विकास के कार्यक्रमों में लगा सके। आज इनमें से कुछ मान्यताओं पर प्रश्न चिह्न लगाया जा रहा है। क्योंकि जापान की इच्छा विश्व के मामलों में कहीं अधिक सक्रिय और स्वतंत्र भूमिका निभाने की है, और अमेरिका भी, आर्थिक कारणों से यह चाहता है कि जापान प्रतिरक्षा के व्यय का अधिकांश भार स्वयं वहन करे।

14.3 मित्र राष्ट्रों का कब्ज़ा

जापान पर मित्र राष्ट्रों का कब्ज़ा 28 जुलाई 1945 की पौट्सडेम घोषणा के प्रावधानों के तहत हुआ। फिर भी, वास्तव में कब्ज़े का काम अमेरिका ने किया। अंग्रेज़ी और अन्य राष्ट्र कुल देशों की सेनाओं की एक छोटी-सी टुकड़ी ही इसमें शामिल थी। जनरल डगलस मेक आर्थर का अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने मित्र राष्ट्रों का सर्वोच्च सेनापति (स्कैप) नियुक्त किया था। लेकिन, वास्तविकता यह थी कि मैक आर्थर जापान का शासक बन गया था। वैसे यह जापानी सरकार के जरिए ही हुआ था जो भंग नहीं हुई थी। जापानी विदेश मंत्रालय ने एक केंद्रीय संपर्क कार्यालय की स्थापना की, जिसका काम स्कैप के निर्देशों को निपटाना और संसाधन करना था। इसके कारण जापानियों के लिए स्कैप की नीति को संशोधित करना, या बदलना, यहाँ तक कि उसके क्रियान्वयन में विलम्ब करना भी संभव हो गया।

इस नीति के बुनियादी प्रारूप का निर्धारण जापान के लिए अमेरिका की शुरुआती आत्म-समर्पण पश्चात् की नीति में हो गया था, जिसकी घोषणा 29 अगस्त, 1945 को की गयी। इस नीति के दो प्रमुख उद्देश्य थे :

एक, उसकी इच्छा वह सुनिश्चित करने की थी कि जापान फिर कभी अमेरिका या विश्व की सुरक्षा के लिए खतरा न बन सके।

दो, एक जनतांत्रिक और जिम्मेदार सरकार की स्थापना करना।

इन उद्देश्यों को पूरा करने के वास्ते अमेरिका सैन्यवाद और विस्तारवाद के उस ढाँचे को नष्ट करना चाहता था जिसके कारण जापान ने अपने आपको युद्ध में झोंका और अपनी जनता का ही दमन किया। अमेरिका यह महसूस करता था कि बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों और सेना का व्यवस्था पर आवश्यकता से अधिक नियंत्रण था, और उन्होंने सरकार के नियंत्रण के जरिए एक ऐसी सम्राट आधारित विचारधारा का प्रसार कर दिया था जिससे देश की जनता भीरू और दब्बू बन गयी थी। इसलिए यह आवश्यक था कि इस नीति का पालन करने वाले लोगों को शुद्ध किया जाए, और व्यवस्था को मुक्त और अधिक जनतांत्रिक और कम केंद्रित बनाया जाए।

बदलाव का आधार बनाने के लिए कब्ज़ा करने वाली (या, अधिपत्य) सेनाओं ने सफाई करना शुरू किया और उन्होंने पहले की सरकार के अधिकारियों को शुद्ध किया और कई कार्यालयों को समाप्त कर दिया। बृहत्तर पूर्व एशियाई मामलों के मंत्रालय जैसे मंत्रालयों को समाप्त कर दिया गया। स्कैप के पहले निर्देश में यह आदेश दिया गया कि तमाम जापानी सेनाओं की लामबंदी समाप्त की जाए।

अक्टूबर, 1945 तक विशेष राजनीतिक पुलिस और सार्वजनिक शांति रखरखाव कानून को समाप्त कर दिया गया। न्यूरेनबर्ग की तरह युद्ध अपराधियों पर मुकदमा चलाने के गठित, सुदूर पूर्व के अंतर्राष्ट्रीय सैनिक ट्रिब्यूनल (अदालत) ने लगभग छह हजार पर मुकदमा चलाया और 920 को सजा सुनायी। 200,000 से अधिक को, पिछली सरकार के अपराधों में उसका साथी होने के कारण, हटा दिया गया। यह एक दिलचस्प तथ्य है कि चोटी के जिन 28 नेताओं पर मुकदमा चलाया गया उन पर अभियोग लगाने के लिए हिरोहितों के जन्मदिन 29 अप्रैल 1946 को चुना गया, और उनके मृत्यु दंड को पूरा करने के लिए उसके पुत्र अकीहितो के जन्मदिन 23 दिसम्बर को चुना गया।

14.3.1 राजनीतिक निहितार्थ

पहली समस्या सम्राट की स्थिति की थी। इस बात पर विवाद था कि उसे युद्ध के लिए उत्तरदायी ठहराया जाए या नहीं। अनेक जापानी नेताओं पर तो मुकदमा चलाया गया और उन्हें मृत्यु दंड भी दिया गया, लेकिन सम्राट पर कभी मुकदमा नहीं चला। मित्र राष्ट्रों के अनेक संगठन चाहते थे कि सम्राट हिरोहितों पर मुकदमा चले। वे सम्राट को मित्र राष्ट्रों के हजारों सैनिकों की मृत्यु और उनके साथ हुए दुर्व्यवहार के लिए जिम्मेवार मानते थे। जापान के वामपंथी भी यह चाहते थे कि जापान को फासीवाद की ओर ले जाने वाली सम्राट व्यवस्था को समाप्त कर दिया जाए।

जापान के रूढ़िवादी और जनरल मैक आर्थर भी, यह चाहते थे कि सम्राट को बनाए रखा जाए। उनका मानना था कि उसके खिलाफ कोई कार्यवाही करने से सामाजिक अव्यवस्था की स्थिति बन सकती थी। फिर भी, सम्राट को अपनी दिव्यता त्याग देने के लिए बाध्य कर दिया गया। जापान से सम्राट को सूर्य देवी का सीधा वंशज होने के मिथक को शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से प्रसारित किया गया था और उसे जापान के अनूठे होने का आधार बनाया गया था। हिरोहितों ने, 1946 के नव वर्ष दिवस पर एक रेडियो प्रसारण में, यह कहकर अपनी दिव्यता का त्याग किया कि जिन बंधनों ने उसे उसकी जनता के साथ जोड़ा हुआ था उनका आधार ''आपसी भरोसा प्रेम और आदर था। वे केवल दंत कथाओं या अंधविश्वास पर नहीं टिके थे।''

अधिपत्य (या कब्ज़ा करने वाले) अधिकारियों ने जो अगला कदम उठाया, वह था नये संविधान का प्रारूप तैयार करना। इस प्रक्रिया में अनेक प्रारूपों का निर्माण शामिल था। पहला प्रारूप एक राजनायिक शिदेहारा किजुरो, की अध्यक्षता वाली जापानी सरकार की एक समिति ने तैयार किया। लेकिन मैक आर्थर के विचार में प्रारूप में अत्यधिक सतर्कता बरती गयी थी। उसने अपने सदस्यों से ही एक प्रारूप तैयार करवाया जिसमें एक जनतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करने के लिए आवश्यक स्थितियों की माँग को पूरा करने का प्रयास किया गया। जनरल मुख्यालय के सरकारी अनुभाग ने 1946 के प्रारंभ में जो प्रारूप तैयार करके दिया उसे नवम्बर 1946 में लागू किया गया।

नये संविधान ने सम्राट के हाथों से प्रभुसत्ता लेकर जनता के हाथों में सौंप दी। सम्राट ''जनता की एकता और राज्य का प्रतीक'' बन गया। मेजी संविधान के सिद्धांतों से यह बहुत

दूरगामी बदलाव था। डायट में दो सदन ही बने रहे, लेकिन पहले की अभिजात सभा को एक निर्वाचित पार्षद सभा में बदल दिया गया। मुख्य विधायी अधिकार निम्न प्रतिनिधि सभा के पास थे। संसद सामूहिक रूप से डायट के प्रति उत्तरदायी थी। न्यायपालिका संवैधानिक दृष्टि से स्वाधीन हो गयी। मेजी संविधान से भिन्न जिन अन्य प्रमुख बातों को लिया गया, वे थीं :

i) महिलाओं को मतदान का अधिकार और पुरुषों के साथ कानूनी समानता दी गयी।

ii) स्थानीय स्वायत्तता के सिद्धांत को भी संविधान में लिखा गया।

iii) सबसे मौलिक या क्रांतिकारी परिवर्तन अनुच्छेद 9 के रूप में था जिसमें जापान के युद्ध छेड़ने के अधिकार को त्याग दिया गया।

इस अनुच्छेद में लिखा है कि ''जापानी लोग एक प्रभुसत्तात्मक अधिकार के रूप में युद्ध का और अंतर्राष्ट्रीय झगड़े निपटाने के साधन के रूप में बल प्रयोग की धमकी का हमेशा के लिए त्याग करते हैं''। इसमें आगे लिखा है कि थल, नौ और वायु सेनाओं को कभी नहीं रखा जाएगा और राज्य के झगड़े के अधिकार को मान्यता नहीं दी जाएगी। इस अनुच्छेद के दूरगामी प्रभाव हुए। वैसे इसमें संशोधन भी किया गया, क्योंकि अमेरिका की नीति के कारण जापान को अपनी सैनिक क्षमता का विकास करना पड़ा।

नये राजनीतिक ढाँचे में, जनता पर निकट का नियंत्रण रखने वाले गृह मंत्रालय और पुलिस को छोटी-छोटी इकाइयों में बांट दिया गया और उनके अधिकारों में कमी कर दी गयी। श्रम कानूनों में मज़दूरों के संगठित होने और सामूहिक कार्यवाही करने के अधिकार को सुनिश्चित किया गया, और जिन साम्यवादियों या अन्य प्रगतिशील तत्वों को सरकार की नीतियों का विरोध करने के कारण जेल में डाल दिया गया था, उन्हें रिहा कर दिया गया। युद्ध के पश्चात् का पहला आम चुनाव अप्रैल 1946 में संपन्न हुआ। उस समय तक मंत्रिमंडलों का गठन चुनावों के आधार पर नहीं, बल्कि नियुक्ति के आधार पर हुआ था। आम चुनावों ने जनता द्वारा नये संविधान की स्वीकृति का काम किया। फिर भी, कोई एक दल स्पष्ट बहुमत लेकर नहीं निकला, और प्रधानमंत्री बनने वाला योशिदा शिगेरू एक अस्थिर सरकार का नेता रहा।

जिस कुलीनवादी शिक्षा व्यवस्था को अधिपत्य शक्तियों ने अधिकारियों के प्रति अंध-आज्ञाकारिता और समर्पण का भाव पैदा करने वाली व्यवस्था के रूप में देखा था, उसमें आमूल-चूल परिवर्तन करने की माँग हुई। यह तर्क दिया गया कि सम्राट के प्रति श्रद्धा और जापानियों के अनूठे होने के विचारों को अत्यधिक नियंत्रित शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से फैलाया गया था। अधिपत्य (या, कब्ज़ा करने वाली) शक्तियों ने शिक्षा मंत्रालय अधिकारों को कम कर दिया और अमेरिकी व्यवस्था पर आधारित एक व्यवस्था को अपनाया गया। इस व्यवस्था में छह वर्ष की अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा और उसके बाद क्रमशः तीन वर्ष की माध्यमिक शिक्षा और तीन वर्ष की उच्च शिक्षा और फिर चार वर्ष की विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा का प्रावधान रखा गया। सह-शिक्षा को लागू किया गया। शिक्षा का विकेंद्रीकरण और स्थानीय परिषदों का गठन व्यवस्था के जनतंत्रीकरण में निर्णायक रहे।

14.3.2 आर्थिक निहितार्थ

अधिपत्य शक्तियों ने अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। जिस समय जापान ने आत्म-समर्पण किया, उस समय तक उसे लगभग 20 प्रतिशत संसाधनों की क्षति हो चुकी थी। औद्योगिक उपकरणों की तो भारी क्षति हुई और कई कारखाने भी नष्ट कर दिए गये, लेकिन भारी और रासायनिक उद्योग की काफी उत्पादन क्षमता बरकरार रही। युद्ध सामग्री

के उत्पादन की ओर अर्थव्यवस्था को मोड़ दिए जाने के कारण नागरिक (या, गैर-सैनिक) उपयोग के सामान की भारी कमी हो गयी। शहरों में खाद्य सामग्री की कमी और मुद्रास्फीति के कारण लोगों के लिए जीना कठिन हो गया, वैसे भूखमरी उस तरह की नहीं थी जैसी कि जापानी शासन के अधीन फिलीपीन या फिर चीन ने देखी थी।

प्रारंभ में स्कैप ने दंड देने वाले की भूमिका अदा की। यह माना गया कि जापान की औद्योगिक क्षमता इसकी आक्रामकता के लिए जिम्मेवार थी, इसलिए उसे एशिया का प्रमुख औद्योगिक देश बनाने वाली इस क्षमता को कम किया जाना चाहिए। इस उद्देश्य से, **जैबात्सू** को भंग कर दिया गया और विकेंद्रीकरण और जनतंत्र लागू करने के उद्देश्य से व्यापक भूमि सुधार किये गए।

जैबात्सू ऐसे बड़े-बड़े गुट थे जो पिन से लेकर विमान तक से संबंधित विविध प्रकार के व्यापारों से जुड़े थे। प्रमुख गुट थे- **मित्सुई मित्सुबिशी, सुमितीमो** और **यासुदा** प्रत्येक गुट के संगठन का केन्द्र एक नियंत्रक कंपनी होती थी और अधिकांश नियंत्रण अब भी परिवार के सदस्यों के हाथों में होता था। स्कैप ने उनकी संपत्ति को ज़ब्त कर लिया और नियंत्रक कंपनियों को भंग कर दिया। भूमि सुधार ने जापान के गांवों में संकट की स्थिति टालने में मदद की, जहाँ लौटने वाले सिपाहियों के कारण आबादी बढ़ गयी थी, जिसके परिणामस्वरूप उन छोटे किसानों को मुश्किलों का सामना करना पड़ गया जिनकी संख्या ग्रामीण आबादी का सत्तर प्रतिशत थी। भूमि परिसीमन और बड़े भूस्वामियों से भूमि ज़ब्त किये जाने और कृषि सहकारिताओं के गठन में ग्रामीण क्षेत्रों को स्थिरता प्रदान करने की मदद की।

स्कैप की नीति में बदलाव आना तब शुरू हुआ जब 1946 में जापान को खाद्य सहायता दी गयी। 1948 के मध्य तक स्पष्ट तौर पर एक मज़बूत और आत्मनिर्भर जापान में पुनर्निर्माण का कार्य शुरू हो गया था। युद्ध समाप्त होने से भी पहले, कई अमेरिकी नियोजक यह चुके थे कि चीन में साम्यवाद की उभरती शक्ति के विरुद्ध जापान को एक मित्र देश के रूप में लिया जा सकता था। उन्हें डर था कि चीन सोवियत संघ के साथ गठबंधन का सकता था। जापान में भी कई नेताओं को इस बात का डर था कि युद्ध में हार के कारण सामाजिक क्रांति हो सकती थी, और उन्होंने जिस तेजी के साथ आत्म-समर्पण किया उसके पीछे एक कारण यह भी था।

इस दिशा में परिवर्तन को अक्सर ''उल्टा मार्ग'' कहा जाता है, और 1953 में कोरियाई युद्ध छिड़ने के बाद यह स्पष्ट भी हो गया। अगस्त 1950 में, एक राष्ट्रीय पुलिस आरक्षी का गठन किया गया और 1954 तक एक आत्मरक्षा अभिकरण और आत्मरक्षा बलों का गठन कर लिया गया था। सितम्बर 1951 की सान फ्रांसिस्कों संधि में एक द्विपक्षीय आपसी सुरक्षा संधि संपन्न हुई जिसमें यह स्पष्ट कर दिया गया कि जापान अपनी प्रतिरक्षा की अधिकाधिक जिम्मेदारी अपने ऊपर लेगा। इसी तरह आधिपत्य शक्तियों और जापान के स्वाधीन हो जाने के बाद नयी सरकार दोनों ने कई और परिवर्तन किये। इस तरह ''उल्टे मार्ग'' का काल क्षेत्र आधिपत्य काल और नयी सरकार के शासन के प्रारंभिक वर्षों तक जाता है। बदले हुए उद्देश्यों के कारण जापान को अमेरिकी पूँजी, प्रौद्योगिकी और बाज़ार तक पहुंच का फायदा मिला।

14.3.3 कब्ज़े पर जापान की प्रतिक्रियाएँ

कब्ज़े को लेकर जापान की प्रतिक्रियाएँ वैचारिक न होकर व्यावहारिक आवश्यकता से प्रेरित थीं। जापान में प्रवेश के समय अमेरिका सेनाओं ने प्रतिरोध की अपेक्षा की थी, लेकिन अपना आम स्वागत देखकर वे चकित रह गये। इसका कारण यह था कि अधिकांश जापानी युद्ध

से तंग आ चुके थे। इसके अतिरिक्त, जन संचार माध्यमों पर स्कैप का नियंत्रण था जो बिना किसी विवाद के अपने दृष्टिकोणों और विचारों का प्रसार कर सकती थीं। अंतिम बात यह कि, स्कैप ने जो सुधार किये उससे जापानी समाज के व्यापक वर्गों को फायदा पहुंचा। उन्हें ऐसे अधिकार दिए गये जिनसे उन्हें अब तक वंचित रखा गया था। उदाहरण के लिए, महिलाओं को जो नये अधिकार दिए गये वे किसी आंदोलन की देन नहीं थे। वस्तुतः सर्वेक्षणों के अनुसार, अधिकांश महिलाओं की इन अधिकारों में दिलचस्पी नहीं थी।

इसलिए, कुछ विद्वानों ने अमेरिकी आधिपत्य को जापान में जनतंत्र की शुरुआत माना है। उन्हें इसमें जापानी इतिहास के प्रवाह में एक तोड़ दिखायी देता है, जब अत्यधिक नये विचारों और प्रथाओं को जबरन जापानी समाज में लागू किया गया। आज, अनेक जापानी विद्वान युद्ध पूर्व के घटनाक्रमों का पुनरावलोकन कर यह तर्क दे रहे हैं कि आधिपत्य सुधारों के लिए आधार पहले ही तैयार किया जा रहा था, और जापानी जनतंत्र के मूल की तलाश के लिए हमें मेजी काल के लोकप्रिय आंदोलनों तक लौटना चाहिए। इन भिन्न विचारों के बावजूद आधिपत्य काल एक ऐसे महत्वपूर्ण अंतराल का द्योतक है जिसके दौरान आंतरिक बदलावों की शुरुआत की गयी। जापान का घनिष्ठ संबंध अमेरिकी विदेश नीति के उद्देश्यों से था। अंत में, यह उल्लेख करना होगा कि आधिपत्य के दौरान जापान के आंतरिक बदलावों की शुरुआत की गयी।

राजनीतिक परिदृश्य में दो अत्यधिक शक्तिशाली विभूतियाँ उभर कर सामने आयीं। एक था– जनरल डगलस मैक आर्थर जिसने आधिपत्य नीतियों को गढ़ने और निर्देशित करने में निर्णायक भूमिका निभायी, और दूसरा योशिदा शिगेरू जो युद्ध पश्चात् के जापान में नये संविधान के तहत चुना जाने वाला पहला प्रधानमंत्री बना। उसने युद्धोत्तर जापान के ढाँचे के लिए आधार तैयार किया। प्रधानमंत्री बनने के समय योशिदा साठ वर्ष का था। वह 1930 के दशक में इंग्लैंड में जापान का राजदूत रह चुका था। वैसे तो उसने चीन में जापान की कार्यवाहियों का समर्थन किया था, लेकिन जर्मनी के साथ गठबंधन का उसने विरोध किया था। रूढ़िवादी योशिदा ने देख लिया था कि जापान का भविष्य अमेरिका के साथ गठबंधन और आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने में निहित था। ये वे दो स्तंभ थे जिन पर जापान के विकास का ढाँचा खड़ा किया गया।

बोध प्रश्न 1

1) आधिपत्य करने वाले अमेरिकी अधिकारियों के लक्ष्यों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

2) आधिपत्य के आर्थिक निहितार्थ की रूपरेखा स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

3) आधिपत्य पर जापान की प्रतिक्रिया पर टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

14.4 उच्च विकास का काल (1952-1973)

जैसा कि हमने प्रस्तावना में कहा था जापान के विकास को पूरी तौर पर समझने के लिए, हम इस भाग में प्रमुख आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रमों की चर्चा करेंगे।

14.4.1 राजनीतिक घटनाक्रम

जिस काल में जापान ने अपनी राजनीतिक स्वाधीनता को फिर से हासिल किया, उसमें आर्थिक विकास के एकाकी प्रयास देखने में आये। शुरू के वर्ष वास्तव में पहले के दौर का ही विस्तार थे, लेकिन 1955 तक युद्ध पश्चात् की व्यवस्था की बुनियादी रूपरेखा तैयार हो गयी थी। 1955 में समाजवादी पार्टी की दोनों शाखाओं का अक्टूबर में विलय होकर जापान समाजवादी पार्टी बन गयी और नवम्बर में दो रूढ़िवादी दलों का विलय होकर उदारवादी जनतांत्रिक पार्टी का गठन हो गया। आगे चलकर, युद्ध पश्चात् के जापान की राजनीति में इसी उदारवादी जनतांत्रिक पार्टी का बोलबाला रहा। ये दोनों पार्टियाँ उस व्यवस्था का अंग बन गयीं जिस डेढ़ पार्टी की व्यवस्था कहा जाता था, क्योंकि समाजवादी सबसे बड़ा प्रतिपक्ष होते हुए भी इतना बड़ा पक्ष नहीं था कि नीतियों को प्रभावित कर सकता था।

उदारवादी जनतांत्रिक पार्टी चुनावी प्रक्रिया पर हावी रही और छठवें प्रतिनिधि सभा आम चुनावों में जीत कर वह सत्ता में आ गयी। समाजवादी विपक्ष में आये, और जो दक्षिण और वाम गुट एक हुए थे, उनमें प्रायः असहमति रहती थी। 1955 में उनमें विभाजन हो गया, जिसमें दक्षिणपंथी गुट ने जनतांत्रिक समाजवादी पार्टी बना ली।

युद्ध समाप्त होने के बाद के वर्षों में नये धार्मिक पंथों का उदय हुआ। इनमें से अनेक की स्थापना युद्ध से पहले के वर्षों मे हुई थी, लेकिन वे लोकप्रिय युद्ध पश्चात् के उन कठिनाइयों वाले वर्षों में ही हुए जब लोगों ने उसके उपदेश में सांत्वना और शांति ढूंढनी चाही। इनमें से **सोक्कागक्काई** या मूल्य सर्जक समाज अपनी व्युत्पत्ति तेहरवीं शताब्दी के बौद्ध पुरोहित निचीरेन से बताता था। निचीरेन ने एक राष्ट्रवादी बौद्ध पंथ की स्थापना की थी और वह इस बात के लिए विख्यात था कि उसने अपनी प्रार्थना के बल पर तूफान उठाकर आक्रमणकारी मंगोल बेड़े को नष्ट कर दिया था। इस दैवीय हवा या **कामीकाज़े** शब्द का उपयोग युद्ध के दौरान आत्मघाती बमवर्षकों के लिए भी किया गया था। बौद्ध संगठन **सोक्कागक्काई** बहुत प्रभावशाली हो गया और 1964 में उसकी सहायता से एक राजनीतिक दल का गठन हुआ। कोमेतो अथवा स्वच्छ शासन पार्टी कुछ समय के लिए एक बड़ी शक्ति बन गयी। वैसे इसकी शक्ति शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित थी। जापान साम्यवादी पार्टी पर युद्ध के पहले वाली सरकार ने पाबंदी लगा दी थी, लेकिन अमेरिकी आधिपत्य ने उसे सक्रिय होने की अनुमति दे दी, और इस पूरे दौर में इसे डायट में अल्पमत का स्तर मिला रहा। लेकिन इसका दैनिक पार्टी अखबार **अकाहाता** (लाल ध्वज) खूब बिकता था।

विशेषकर इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि शुरुआती दौर में गठबंधन बदलते रहे और विवाद खड़े होते रहे, जिनका प्रायः यह परिणाम हुआ कि डायट के अंदर अव्यवस्था हो गयी और बाहर प्रदर्शन हुए। सरकार ने अपनी शक्ति बढ़ाने और अपने नियंत्रण का विस्तार करने प्रयास किया। शिक्षा मंत्रालय ने स्कूल अध्यापकों और पाठ्य-पुस्तकों पर अपने निरीक्षण अधिकारों को और बढ़ा लिया। पुलिस के अधिकार बढ़ा दिए गये और आत्मरक्षा बलों में भी लगातार वृद्धि हो रही थी। विवाद का एक प्रमुख 1951 की अमेरिका-जापान परस्पर सुरक्षा संधि थी। इस संधि की 1960 में समीक्षा होनी थी, और इसके संशोधन को लेकर एक बड़ा आंदोलन खड़ा हो गया।

इस संधि के संशोधन से पहले व्यापक प्रदर्शन हुए। 19 मई 1960 को डायक के विपक्षी सदस्यों ने सदन के अध्यक्ष (स्पीकर) को पकड़ लिया और उसे डायट से भवन के तलघट में बंद रखा। इससे झगड़े हो गये और संशोधन का काम विपक्षी सदस्यों की अनुपस्थिति में ही कर दिया गया। इससे जनता भड़क गयी और कुछ और प्रदर्शन हुए जिनका नेतृत्व छात्र संघों के परिसंघ **जेंगाकुरेन** जैसे उग्र छात्र संगठनों ने किया। सबसे बड़ा प्रदर्शन 15 जून को जिसमें डायट को घेर लिया गया और झड़प में टोक्यो विश्वविद्यालय की एक युवा मारी गयी। संधि 23 जून को प्रभावी हुई और प्रधानमंत्री किशी नोबुसुके ने अगले महीने जुलाई में त्यागपत्र दे दिया।

सुरक्षा संधि विरोधी प्रदर्शन और उनकी विफलता युद्धोत्तर काल की महत्वपूर्ण घटना थी। अनेक विद्वान इन्हें भागीदारी जनतंत्र का प्रमाण मानते हैं। प्रदर्शन होने का कारण संधि का मसौदा ही नहीं थी, बल्कि किषी का इस स्थिति से निपटने का तरीका भी रहा। अनेक लोगों का यह मानना था कि सत्तारूढ़ एल.डी.पी. ने जो ज़ोर जुल्म किये उनकी कोई आवश्यकता नहीं थी। लाखों लोगों ने इसलिए आम चुनावों की माँग करने वाली याचिका पर हस्ताक्षर किये। लेकिन, यह भी याद रखना चाहिए कि 1962 में एस.डी.एफ. ने ज़मीन से हवा में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र हासिल कर लिए थे, और जब अमेरिका ने यह वक्तव्य दिया कि एक नाभिकीय जलपोत जापान भेजा जाएगा तो, इसे लेकर कोई प्रदर्शन नहीं हुआ। जापान उच्च वृद्धि के काल में अपने पांव जमा रहा था और अपनी शक्तियों को विकास के कार्यों में लगा रहा था।

14.4.2 आर्थिक विकास

सन् 1954 से लेकर 1971 तक जापान ने दस प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से वृद्धि की, जिसे ''चमत्कार'' बताया गया। इस दौरान औद्योगिक सुविधाएँ कुल राष्ट्रीय उत्पाद का 36 प्रतिशत तक बढ़ गयीं, और जापान का वैसे ही तेज़ी से रूपांतरण हआ जैसे मेजी पुनरुत्थान के बाद के वर्षों में हुआ था। बहुत-से लोगों के मन में जो सबसे पहला सवाल उठता है वह यह है कि जापान ने यह सब हासिल कैसे किया। क्या यह चमत्कारी वृद्धि सुविचारित और निष्पादित नीतियों का ही एक अंग थी? अनेक विद्वानों ने यह तर्क दिया है कि जापान को ये परिणाम उसकी सोच-विचार कर अपनायी गयी नीतियों के कारण हासिल हुए। उदाहरण के लिए, इतिहासकार चामर्स जॉनसन ने जापान के आर्थिक विकास को दिशा और नेतृत्व देने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले शक्तिशाली संगठन (MITI) की भूमिका के विषय में लिखा है। अनेक कृतियों अथवा लेखों में ध्यान का केन्द्र सरकार-व्यापार-उद्योग के बीच के घनिष्ठ संबंध रहे हैं, और तर्क यह दिया गया है कि इसी घनिष्ठता के साथ काम करने के कारण आर्थिक लक्ष्यों पर और इन आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतियों पर सहमति अथवा एकमत बनाना संभव हुआ।

युद्ध पश्चात् के जापान में आर्थिक उछाल प्रधानमंत्री इकेदा के ''आय दुगुनी करने'' की योजना शुरू करने से पहले ही शुरू हो चुकी थी। यह योजना समृद्धि के अस्तित्व में आने का प्रतीक था। 1960 तक जापान का कुल राष्ट्रीय उत्पाद दुनिया में पाँचवें स्थान पर आ गया था, और 1968 तक उसका स्थान अमेरिका के बाद दूसरा हो गया था। जापानी अर्थव्यवस्था को सरकारी नियंत्रणों और नेतृत्व में रखा गया, लेकिन प्रतिस्पर्धा को हतोत्साहित नहीं किया गया, बल्कि वह जबरदस्त थी और सरकार के दृष्टिकोण में भी लचीलापन रहा।

इस्पात उद्योग की ओर 1950 के दशक में विशेष ध्यान दिया गया। उसका विस्तार करने के लिए ऋणों और कोष की व्यवस्था की गयी। इसके परिणामस्वरूप 1970 के दशक के मध्य तक जापान उत्पादन के मामलों में पश्चिम की इस्पात फर्मों से आगे निकल चुका था। MITI ने प्रारभ में तो कड़ा नियंत्रण रखा और लक्ष्य निर्धारित किये, लेकिन जब इस्पात फर्मों की वृद्धि हो चली तो, उसने उनके नियोजन का काम उन्हीं पर छोड़ दिया। लेकिन ''प्रशासनिक नेतृत्व'' का काम उसने अपने पास ही रखा। इस नेतृत्व को कानूनी समर्थन नहीं था, लेकिन कंपनियों के लिए भी इस नेतृत्व को नहीं मानना असंभव नहीं तो अत्यधिक कठिन तो था ही। ऐसे ही कदम पोत-निर्माण जैसे उद्योगों में भी उठाये गये।

जापान की प्रारंभिक सफलता ने इसके व्यापारी सहभागियों के लिए समस्याएँ खड़ी कर दी। इन व्यापारियों को सीमित बाज़ारों और सस्ते निर्यातों को लेकर शिकायत हो गयी। जापानी वस्त्र, जूते आदि यूरोपीय और अमेरिकी बाज़ारों में अपनी पैठ कर रहे थे। जापान ने विदेशी फर्मों को प्रवेश की कुछ अनुमति तो दी, लेकिन जापानी कंपनियों के विदेशी स्वामित्व को 25 प्रतिशत तक सीमित कर दिया। बुनियादी तौर पर यह नीति अत्यधिक प्रतिबंध लगाने वाली रही, और 1980 के दशक में भी विदेशी स्वामित्व 2 प्रतिशत से नीचे ही रहा।

अनेक जापानी विद्वानों ने जिस आम विचार पर तर्क किया वह यह था कि जापान की वृद्धि का श्रेय सीमित बाज़ारों को नहीं, जापानी व्यवस्था को जाता है। इस व्यवस्था का केन्द्र आजीवन रोज़गार, वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नति और उद्यम संघ थे। जापानी कंपनियों में मज़दूरों की नियुक्ति उनके कार्य-जीवन के लिए होती थी, और कंपनी उनकी आवास, चिकित्सा और अवकाश जैसी अनेक आवश्यकताओं को पूरा करती थी। कर्मचारी को इस आधार पर वेतन दिया जाता था कि उसने कितने वर्ष काम किया और उसी के अनुसार उसे पदोन्नति दी जाती थी। इसका अर्थ यह होता था कि कर्मचारी को नौकरी बदलने की आवश्यकता नहीं होती थी। ''योग्यता'' से अधिक जोर निष्ठा और समर्पण की भावना पर रहता था। संघों का गठन विभिन्न उद्योगों के बीच नहीं, बल्कि फर्म या उद्यम के स्तर पर होता था। इसका अर्थ यह था कि बाहरी हस्तक्षेप के लिए कोई गुंजाइश नहीं थी और कंपनी और श्रमिक संघ साथ-साथ मिलकर उत्पादकता बढ़ा सकते थे।

लेकिन यह आदर्श व्यवस्था व्यापक तौर पर बड़ी फर्मों में ही लागू थी, जबकि अधिकांश मज़दूर छोटी फर्मों में थे। जापान में एक दूसरा ढाँचा था। कुछ ऐसी बड़ी कंपनियाँ थीं जो मुनाफे की सुनिश्चितता देती थीं और उनका उत्पादन भी अधिक था। लेकिन 53 प्रतिशत मज़दूर ऐसी फर्मों में काम करते थे जिनमें, 1965 में, सौ से कम लोग काम करते थे। इन मज़दूरों के बीच का अंतर उनके वेतन में और काम की दशाओं में दिखायी देता था। वैसे, 1970 के दशक में यह अंतर कम होने लगा। इसके अतिरिक्त, छोटी फर्मों के मजदूर बहुत कम संगठित होते थे। अंतिम बात यह कि, वेतन और काम की किस्म को लेकर महिला मज़दूरों के साथ भेदभाव किया जाता था। इसके परिणामस्वरूप आजीवन व्यवस्था के तहत स्थायी महिला कर्मचारियों की संख्या न के बराबर थी। स्त्रियों और पुरुषों के वेतनों के बीच का अंतर 1970 के दशक में कुछ कम हुआ, लेकिन न्यूनतम वेतन पाने वालों में महिलाओं की संख्या बहुत बढ़ गयी।

उन्नीस सौ साठ के दशक की आर्थिक विकास ने सामाजिक परिदृश्य को बदल कर रख दिया। गांवों से शहरों की ओर पलायन बढ़ गया और शहरी केंद्रों में आबादी का जमाव अधिक हो गया। ऐसा विशेषकर **ओसाका-टोक्यो पट्टी** में हुआ। उद्योग और आबादी का जमाव इस क्षेत्र में होने के कारण घिचपिच आवास और औद्योगिक प्रदूषण की स्थिति बन गयी। नागरिक संगठनों और निवासी संघों ने पर्यावरण को खराब करने का विरोध और बेहतर रहन-सहन की माँग शुरू कर दी। आर्थिक विकास के मुनाफों से देश तो संपन्न हो रहा था, लेकिन जापानी जनता को पश्चिमी देशों की जनता की तरह सामाजिक लाभों का फायदा नहीं मिल रहा था। टेलीविज़न, वाशिंग मशीन और रेफ्रिजरेटर ने लोगों के जीवन को बदल डाला और सफलता के ये प्रतीक तेजी से पूरे जापान में फैल गये।

सन् 1953 में **मिनामाटा** रोग पहली बार प्रकाश में आया। इस रोग का प्रभाव यह होता था कि इसके रोगी अपनी शारीरिक क्रियाओं पर नियंत्रण खो बैठते थे। इस रोग का कारण औद्योगिक प्रदूषण था, जिसका पता 1959 में चला। लेकिन 1973 में जाकर इसके रोगियों को अदालती हर्जाना मिल पाया। दूसरे रोगों में निर्बाध औद्योगिक विकास के खतरों को समझ पाने की कमी दिखायी दी। 1967 में प्रदूषण पर रोक लगाने के लिए एक कानून पारित किया गया, और 1970 के दशक में सरकार ने प्रदूषण रोकने के लिए गंभीर उपाय किये।

14.5 तेल आघात और उसके पश्चात् की स्थिति

सन् 1973 में ओपेक (तेल उत्पादक) देशों ने यह धमकी दी कि जो देश उनके प्रति मैत्री भाव नहीं रखते, वे उन्हें तेल देना बंद दर देंगे। यह ''तेल आघात'' की स्थिति थी। इस धमकी से जापान भयभीत हो गया। जापान तेल के आयात पर आश्रित था, और उसमें कटौती होने में उसकी अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो जाती। लेकिन जो उपाय किए गए, उनसे अर्थव्यवस्था के लचीलेपन और उसकी मज़बूती का पता चलता है। जापान में ऊर्जा की माँग का सत्तर प्रतिशत तेल पर आधारित था, और उसके नीति-निर्माताओं ने ऊर्जा के उपभोग में कटौती का लक्ष्य सामने रखा। उन्हें इसमें इतनी सफलता मिली कि जहाँ अन्य उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में 1973 से 1980 तक 2 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि हुई, वहीं जापान की अर्थव्यवस्था में 1975 में 3.2 प्रतिशत की, 1976 में 5.3 प्रतिशत की और फिर 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अर्थव्यवस्था, प्रधानमंत्री फुकुदा ताकेओ के शब्दों में, ''इतनी ऊचाइयाँ'' छूने लगी जितनी कि ''फ्यूजी पर्वत''।

सन् 1972 में सातो इसाकू के बाद प्रधानमंत्री बनने वाले तनाका काकुए ने जापान की राजनीतिक रीतियों को बदलने का राजनीतिक काम शुरू किया। उससे पहले भ्रष्टाचार रहा था और ऐसे बदनामी वाले प्रकरण उभर आए थे जिनके कारण राजनीतिक नेताओं को लज्जित होना पड़ा और कई राजनीतिक जीवन चौपट हो गए। अधिकांश जापानी प्रधानमंत्रियों और राजनीतिकों की तरह तनाका कभी टोक्यो विश्वविद्यालय में नहीं पढ़े थे, न ही शक्तिशाली नौकरशाह रहे थे, वह तो अपने बूते पर इस स्थिति पर तक पहुंचे थे। तनाका ने किनकेन सेजी अथवा धन की राजनीति की स्थापना की। तनाका ने मित्र और चुनाव क्षेत्र बनाए और व्यापक संरक्षण के माध्यम से एक शक्तिशाली राजनीतिक तंत्र खड़ा कर लिया।

सत्तारुढ़ उदारवादी जनतांत्रिक पार्टी कुछ गुटों का मिश्रण था। ये गुट चंदा इकट्ठा करने और चुनाव लड़ने में स्वाधीन होकर काम करते थे। इसलिए उनमें निरतर प्रतिस्पर्धा बनी रहती थी लेकिन उनके व्यवहार रीति और सहयोग से भी प्रभावित थे। वे एक स्वीकृत ढाँचे

के अंदर काम करते थे। तनाका के समर्थन और विवादास्पद सौदे प्राप्त करने की आदत का भंडाफोड़ एक पत्रिका में छपे लेख में हुआ। इससे जो विवाद खड़ा हुआ उसके कारण तनाका की सरकार गिर गई। तनाका ने भ्रष्ट आदतों के अतिरिक्त पार्टी के अधिकार को भी नौकरशाही पर हावी रखा।

नौकरशाही ने राजनीतिक दलों से उचित स्वाधीनता बनाए रखकर काम किया था और प्रायः ही राजनीतिकों को विशिष्ट राय उपलब्ध कराई थी। लेकिन, तनाका ने अपने विशेषज्ञ तैयार किए और अपनी विशेष समितियाँ गठित कीं। तनाका के बाद मिकी ताकेओ आया जिसकी ईमानदार प्रशासक के रूप में प्रतिष्ठा थी। लेकिन, मिकी ताकेओ राजनीति में धन की भूमिका को कम करने और गुटबंदी को समाप्त करने के अपने घोषित लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाया।

सन् 1976 में, जापान लॉकहीड कांड (Lockheed Scandal) में डूब गया। लॉकहीड कंपनी ने अपने विमान बेचने के लिए कुछ जापानियों को धन दिया था। इनमें तत्कालीन प्रधानमंत्री तनाका काकुए भी शामिल था। 1976 में तनाका को गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में उस पर लंबा मुकदमा चला। लेकिन, इन अभियोगों के बावजूद तनाका पर्दे के पीछे से अपनी शक्ति का इस्तेमाल करता रहा, और अपनी गुट शक्ति के कारण वह जापानी राजनीति में राजा बनाने वाला असली कर्णधार रहा। तनाका का डायट के दोनों सदनों के 400 सदस्यों में से 120 पर नियंत्रण था और मंत्रिमंडल का गठन उसकी इस ''सेना'' के हाथ में होता था। नीतियों के निर्माण पर भी उसकी ''सेना'' का नियंत्रण था और महत्वपूर्ण मंत्री पदों पर हावी रहती थी। 1983 में तनाका को दोषी पाया गया।

सन् 1971 में MITI ने नव अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं औद्योगिक नीति की आधारभूत दिशा नाम की एक योजना का प्रकाशन किया। यह योजना 1970 के दशक के लिए एक दृष्टि के रूप में रखी गई थी जिसका यह तर्क था कि जापान को औद्योगिक वस्तुओं के उत्पादन से हटकर ज्ञान आधारित उद्योगों की ओर आ जाना चाहिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सरकार ने अनेक उपाय किए। जापान ने टीवी ट्यूबों और वी. सी. आर. के अपने उत्पादन को आधुनिक बनाया। और 1978 में उसने अपने कंप्यूटर उद्योग को अमेरिका की बराबरी पर लाने का प्रयास किया। ज्ञान आधारित उद्योग पर ज़ोर के संदर्भ में पहले उपभोक्ता इलक्ट्रोनिक्स पर ज़ोर दिया गया और रोबोट तक उसका विस्तार किया गया। वाहन उद्योग के क्षेत्र में, जहाँ 1950 में जापान ने कुल 1,600 कारें बनाई थीं, वहीं 1980 तक वह अमेरिका से एक करोड़ 10 लाख अधिक कारों का निर्माण कर रहा था।

जापान ने चुनिंदा सुरक्षा और आर्थिक सहायता की मदद से इस वृद्धि को प्राप्त किया। प्रारंभ में विदेशी कारों के लिए शुल्क दरें हुआ करती थीं। जब इस पर आपत्ति की गई तो, उसने उन बड़ी कारों और तिपहिया वाहनों की अनुमति दे दी जिनकी माँग नहीं थी। साथ ही साथ, उसने ''छोटी कार'' की परिभाषा को विस्तृत कर 2,000 सी. सी. तक की कारों को उसमें शामिल कर लिया। शुल्क दरों को 1970 के दशक में ही हटाया गया, और 1980 तक बाज़ार में विदेशी कारों का अंश केवल 1 प्रतिशत था।

सन् 1982 में नाकासोने यासुहिरो प्रधानमंत्री बना, और आने वाले वर्षों में उसने एक नयी कार्य शैली बनाई। नाकासोने की राजनीति का मूलभूत आधार युद्ध पश्चात् के हिसाबों को चुकता करना था जापान ने प्रधानमंत्री सातो के नेतृत्व में ओकीनावा पर फिर से नियंत्रण कर लिया था, और तनाका के शासन काल में चीन के साथ संबंध शुरू कर दिए थे। नाकासोने जापान को पश्चिमी गठबंधन का एक मज़बूत और सक्रिय सदस्य बनाना चाहता था। उसकी सक्रिय कूटनीति इसी आकांक्षा का एक अंग थी उसने दक्षिण कोरिया को

आर्थिक सहायता उपलब्ध कराके और उसके साथ व्यापारिक अनुबंध करके उसके साथ और भी मज़बूत संबंध बना लिए। उसने अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन के साथ व्यक्तिगत मित्रता भी कर ली।

जापान के अंदर नाकासोने ने प्रशासनिक सुधार लागू करने का काम किया। नीति निर्माण के लिए उसने कुछ विशेषज्ञ समितियाँ गठित की, जिनके विषय में आलोचकों ने यह कहा कि इन समितियों ने डायट की अवहेलना करके जनतांत्रिक प्रक्रिया को नष्ट किया। नाकासोने ने जो कदम उठाए, उनमें से 1985 में उसकी यासुकुनी स्थल की सरकारी यात्रा ने जापान के अंदर भी और चीन जैसे बाहरी देशों में भी विवाद खड़ा कर दिया। यासुकुनी स्थल वह स्थल था जहाँ 1894-95 के चीन-जापान युद्ध से युद्ध में मृत लोगों को समाधिस्थ किया जाता था। नाकासोने की इस यात्रा को सैन्यवाद की वापसी के रूप में देखा गया। क्योंकि इससे राज्य और धर्म की पृथकता का उल्लंघन होता था। लेकिन अनेक गुटों ने इसे एक अत्यधिक स्वाभाविक राष्ट्रभक्ति की अभिव्यक्ति भी माना।

शिक्षा के क्षेत्र में भी नाकासोने का ज़ोर केवल रचनात्मकता बनाने पर नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति की भावना का निर्माण करने पर भी रहा। राष्ट्रभक्ति पर इस जोर का उदारवादियों ने विरोध किया, क्योंकि वे उसे युद्ध-पूर्व के उन राष्ट्रीय उद्देश्यों की वापसी मानते थे, जिसने जापान को युद्ध और विस्तारवाद में झोका था।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में, जापान के उसके व्यापारी सहभागियों के साथ बढ़ते असंतुलनों ने जापान को कड़ी आलोचना का केंद्र बना दिया। 1986 माएकावा प्रतिवेदन में अर्थव्यवस्था को उदार बनाने के उपाय निश्चित किए गए। इस समिति का अध्यक्ष जापानी बैंक का एक भूतपूर्व गवर्नर था। इस प्रतिवेदन में यह भी सुझाव दिया गया कि अधिक जोर लोगों के रहन-सहन के स्तर को सुधारने के लिए सामाजिक पूँजी बनाने पर दिया जाए। जापान का व्यापार अधिशेष एक समस्या बनता जा रहा था। 1987 में येन के बढ़े मूल्य के कारण अधिशेष 96 अरब डालर तक पहुंच गया, जिस पर अमेरिका की प्रतिक्रिया हुई।

अमेरिकी प्रतिक्रिया इस तर्क पर आधारित थी कि जापान ने ''उन्मुक्त व्यापार'' अपना लिया था। दूसरे शब्दों में, जापान ने अपनी सुरक्षा के लिए कोई धन खर्च नहीं किया था, और इस बचत को आर्थिक वृद्धि और व्यापार की दिशा में लगा दिया था। अमेरिकी आलोचकों का तर्क था कि जापान को अपने बाज़ारों को मुक्त कर देना चाहिए और रूढ़ वितरण व्यवस्था जैसे गैर-शुल्क कर बंधनों को हटा देना चाहिए जिनके चलते विदेशी कंपनियों के लिए जापान में बिक्री करना कठिन हो रहा था। इन आलोचकों के अनुसार जापान को अपने प्रतिरक्षा व्यय का एक बड़ा अंश स्वयं वहन करना चाहिए था।

नाकासोने ने दूर संचार और जापान राष्ट्रीय रेल मार्ग जैसी सरकारी एकाधिकार संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण समाप्त करने के लिए भी कदम उठाए। रेल मार्ग को छह क्षेत्रीय समूहों में बांट दिया गया, और स्वदेशी टेलीफोन कंपनी, एन.टी.टी. का निजीकरण कर दिया गया। नाकासोने का प्रभाव जबरदस्त था। उसी के बूते पर उसने 1986 में अपने एल डी पी की अध्यक्षता की दो अवधियाँ समाप्त होने के बाद एक अतिरिक्त वर्ष ले लिया। लेकिन उसके अंतिम वर्ष में पार्टी की लोकप्रियता में गिरावट आई जिसका कारण अलोकप्रिय कर संबंधी कदम थे। लेकिन, नाकासोने के अपने उत्तराधिकारी ताकोशिता गोबोरू के चयन में भी प्रमुख भूमिका निभाई।

नाकासोने मंत्रिमंडल का दौर, वह दौर था जब जापान ने अंतर्राष्ट्रीय मामलों में कहीं अधिक स्पष्ट भूमिका निभानी शुरू की। जापान के अंदर नाकासोने ने जो मुद्दे खोले और

कार्यक्रम रखे वे आज भी राजनीतिक कार्यक्रमों का अंग हैं। लेकिन, चुनाव प्रक्रिया में सुधार और राजनीतिक कोशों को विनियमन के मामले में बहुत सफलता नहीं मिली, और ये समस्याएं जापानी राजनीति के लिए आज भी बनी हुई हैं।

जापान के विदेशी संबंधों का संचालन उसकी सुरक्षा की सुनिश्चितता देने वाले अमेरिका के साथ गठबंधन के ढाँचे के अंदर हुआ है। इसका अर्थ यह हुआ कि 1970 के दशक तक जापान ने अपने पड़ोसी देशों के साथ फिर से संबंध बनाने की दिशा में लगभग कोई भी कदम नहीं उठाए। युद्ध की समाप्ति पर जापान के हाथों नुकसान उठाने वाले देशों को क्षतिपूर्ति का मामला सुलझा लिया गया था, लेकिन सोवियत संघ के साथ कोई शांति समझौता नहीं किया गया। चीन के साथ भी जापान ने अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन की चीन यात्रा के बाद ही संबंध सामान्य किए।

जापान ने अपनी युद्ध काल की विरासत से मुक्ति पा ली और 1965 में दक्षिणी कोरिया के साथ अपने संबंध सामान्य कर लिए, लेकिन जो कोरियाई जबरन जापान में लाए गए थे उनकी समस्या जैसी की तैसी बनी रही। अमेरिका के साथ गठबंधन के कारण होकैडो के उत्तर में स्थित द्वीपों के आधिपत्य को लेकर जापान के सोवियत संघ के साथ संबंध गड़बड़ रहे।

जापान की विदेश नीति अब और भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का प्रयास कर रही है, क्योंकि जापान ने आर्थिक शक्ति अर्जित कर ली है, इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह विकासशील देशों को अपनी आर्थिक सहायता में वृद्धि कर रहा है। जापान और अमेरिका तथा यूरोपीय समुदाय के बीच व्यापारिक और आर्थिक तनाव भी बढ़ रहे हैं, और इसकी सीमित बाज़ार और अनुचित ढंग से विदेशी प्रतिद्वंद्वियों को बाहर रखने की नीति की जो आलोचना हुई है, उसके कारण जापान ने इस डर से विकासशील देशों में पूँजी निवेश शुरू कर दिया है कि कहीं उनके बाज़ारों से उसे बाहर न रखा जाए।

बोध प्रश्न 2

1) जापान ने तेज आर्थिक वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठाए?

....

....

....

....

....

....

2) जापान की ''तेल आघात'' पर क्या प्रतिक्रिया रही?

....

....

....

....

....

....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

3) आज की दुनिया में आप जापान की भूमिका को किस रूप में लेते हैं?

....

....

....

....

....

14.6 सारांश

द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार हुई और मित्र शक्तियों ने उस पर आधिपत्य कर लिया, लेकिन वास्तव में आधिपत्य करने वाली प्रमुख शक्ति अमेरिका थी। अमेरिका ने स्कैप के माध्यम से जापान को सुधारने और उसे एक विस्तारवादी ताकत न बनने देने के लिए उपाय किए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने जापान की राजनीति और समाज को जनतांत्रिक बनाने के लिए कदम उठाए और संविधान को फिर से लिखा।

लेकिन, कोरियाई युद्ध छिड़ने और अमेरिका के नीतिगत उद्देश्यों के कारण अमेरिका ने जापान को एशिया में अपना एक मज़बूत मित्र बनाने की दिशा में काम किया। इसलिए उसने सुधार कार्यों को वापस लेना शुरू कर दिया और रूढ़िवादियों के साथ काम करके एक मज़बूत और स्थिर समाज और एक प्रबल मित्र बनाना सुनिश्चित किया।

सान फ्रांसिस्को की शांति संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद जापान ने अपनी अर्थव्यवस्था को फिर से बनाने का काम शुरू किया और विश्व के मामलों में कोई भूमिका नहीं निभाई। आर्थिक वृद्धि पर पूरा ध्यान देना इसलिए संभव हुआ क्योंकि अमेरिका ने जापान की सुरक्षा की व्यवस्था की। प्रतिरक्षा और सेना पर तो कोई धन व्यय होना नहीं था, इसलिए स्वाभाविक था कि प्रतिरक्षा पर भारी व्यय करने वाले अन्य राष्ट्रों के मुकाबले जापान में आर्थिक विकास कहीं तेजी से होता, जिन नीतियों को अपनाया गया उनके अनुसार एक सुरक्षित किंतु प्रतिस्पर्धा पूर्ण बाज़ार का निर्माण हुआ, और सरकार ने उद्योग के साथ मिलकर उन उद्योगों का पता लगाया जो जापान को एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में उभारने के लिए आवश्यक थे, उन्होंने इन उद्योगों को पनपाया भी। कुछ जगह विफलता भी मिली। लेकिन, व्यवस्था लचीली और समायोजक थी जिसके चलते प्रौद्योगिकी का शुद्ध आयातक जापान 1980 के दशक तक उन्नत प्रौद्योगिकी का निर्यात कर रहा था।

जापान राजनीति की विशेषता एक ही पार्टी एल डी पी का वर्चस्व रहा, जिसकी शक्ति और लंबा काल ठोस ग्रामीण समर्थन और व्यापारियों और नौकरशाही के साथ घनिष्ठ संबंधों की देन रहा। इन गुटों के साथ मिलकर उसने जापान को उच्च वृद्धि की ओर पहुंचाया और कोई भी इस व्यवस्था के लिए खतरा खड़ा नहीं करना चाहता था। समाजवादी और क्रांतिकारी गुट सक्रिय रहते हुए भी राजनीतिक दृष्टि से हाशिए पर ही रहे।

जापान में इस समय बहस चल रही है और वह अपनी भावी प्राथमिकताएँ तय करने का प्रयास कर रहा है। वह दुनिया के मामलों में कोई भूमिका निभाने के लिए विकसित कर रहा है। इसका प्रभाव इस पर भी पड़ेगा कि वह किस प्रकार के समाज का निर्माण करता है। क्या जापानी समाज और भी मुक्त होगा और एक बेहतर सामाजिक वातावरण बनाने पर जोर देगा या अधिक आगमदेह जीवन-शैली उच्च उत्पादकता और आर्थिक मज़बूती को खतरे में डाल देगी? ये वे सवाल हैं जिन पर बहस चल रही है। जापान की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका के संबंध में भी यही स्थिति है। क्या जापान अमेरिकी गठबंधन को अपनी विदेश

नीति का आधार बनाकर काम करता रह सकता है या उसके लिए दुनिया के मामलों में कहीं अधिक स्वाधीन भूमिका अपनाने की आवश्यकता है? यह मिका क्या होगी? क्या अपने विशाल आर्थिक संसाधनों के साथ जापान तीसरी-दुनिया के देशों के विकास कार्यक्रम में कोई भूमिका निभा सकता है या उसकी रुचि केवल एकीकृत बाज़ार बनाकर अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर अपनी शक्ति निश्चित करने में है? शेष विश्व के साथ जापान का भविष्य घनिष्ठता से जुड़ा है और जापान ने तोकुगावा काल के उन वर्षों से एक लंबी यात्रा तय की है, जब वह दुनिया से बिल्कुल कटा हुआ था।

14.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अमेरिकी आधिपत्य अधिकारी चाहते थे :

   क) अमेरिका में जापान की पैठ को रोकना।

   ख) जापान में एक जनतांत्रिक और जिम्मेदार सरकार की स्थापना करना।

   ग) सैन्यवाद के ढाँचे को समाप्त करना, देखिए भाग 14.3।

2) अपने उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल कीजिएः

   क) जापान की औद्योगिक क्षमता को कम करने के लिए स्कैप के विभिन्न प्रयास।

   ख) जैवात्सू को भंग करना।

   ग) व्यापक भूमि सुधार आदि, देखिए उपभाग 14.3.2।

3) देखिए उपभाग 14.3.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 14.4.1 और 14.4.2 ।

2) अपने उत्तर के लिए 14.5 को आधार बनाइए और जापान की ऊर्जा के उपभोग में कटौती की नीतियों को उसमें शामिल कीजिए।

3) देखिए भाग 14.5 का अंतिम अंश।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इस पाठ्यक्रम के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

E .H. Norman. *Japan's Emergence as a Modern State*.

Endymion Wilkinson, *Japan versus Europe: A History of Misunderstanding*.

Ivan Morris (ed.), *Japan 1931-1945: Militarism, Fascism, Japanism?*

Mauris B. Jansen, *Japan and China: From War to Peace (1894-1972)*

W.W. Lockwood. *Economic History of Japan*.

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY